अथ काटना कुत्ते का भइया जी को

डॉ0 गंगाप्रसाद गुप्त "बरसैंया"

अथ काटना कुत्ते का भइया जी को

डॉ. बरसैंया उस आधुनिकता के समर्थक हैं जो जीवन को उसकी सम्पूर्णता में देखकर उसे अविभक्त मानती है, न कि सारे पारम्परिक प्रवाहों और प्रभावों से कटी-कटी रहकर एक खंडित इकाई मात्र। डॉ. बरसैंया का दृष्टिकोण एक प्रबुद्ध युवक का दृष्टिकोण है और उनकी भाव-प्रवणता कला के सौंदर्य-दर्शन को लेकर चलने वाले भावक मन की आन्तरिक जीवन-दृष्टि है जो आत्मान्वेषण के लिए प्रस्तुत करती है।...उनकी रुचि में एक पारदर्शी जागरूकता है जो उन्हें काव्य के सर्वकालिक शाश्वत प्रतिमानों अर्थात् सत्यान्वेषण और सौंदयानभूति के प्रति एकनिष्ठ रखती है।

– श्री रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'

डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया' हिन्दी के सुधी समीक्षक और गंभीर साहित्यिक अभिरुचि से सम्पन्न एक मनस्वी हैं। इनमें गहरे साहित्यिक संस्कार और तदनुरूप जीवन दृष्टि है। आशय यह कि ये समग्र जीवन को साहित्य की आंखों से देखते हैं। यह बहुत ही स्वस्थ और प्रीतिकर जीवन दर्शन है।

– डॉ. कृष्ण चन्द्र वर्मा

आजकल बहुत कम संख्या में हिन्दी के अध्यापक और विद्वान हैं जिनकी अभिरुचि प्राचीन साहित्य और विशेषकर पांडुलिपियों में है, परन्तु हमारा इतिहास, संस्कृति, भाषा और परम्परागत जीवन पद्धति इन्हीं में सुरक्षित है। हमारी रुचि इतिहास और पुरातत्व में ही है, पर आधारभूत साहित्य की हम उपेक्षा कर रहे हैं। यह हमारे लिए संतोष और गर्व की बात है कि डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया' जैसे विद्वान् इस दिशा में निष्ठापूर्वक कार्य कर रहे हैं।

– डॉ. भगीरथ मिश्र

आपने सामाजिक जीवन के बिखरे यथार्थ खंडों को अपनी व्यंग्य-गर्भित शैली द्वारा जैसी सरसता एवं प्रभविष्णुता प्रदान की है, वह स्तुत्य है।

– डॉ. किशोरीलाल

मूल्य : 180.00 रुपये

ISBN 81-86480-71-4

अथ काटना कुत्ते का भइया जी को

(व्यंग्य-संग्रह)

डॉ० गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया'

ISBN 81-86480-71-4

© डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त बरसैंया
प्रथम संस्करण : 2000

प्रकाशक
सार्थक प्रकाशन
100 ए, गौतम नगर
नई दिल्ली - 110 049
दूरभाष : 656 73 17

लेजर-टाइपसैटिंग
माँ प्रभु मीडिया प्रा० लि०
4393/4, अंसारी रोड, दरियागंज
दिल्ली - 110 002
दूरभाष : 327 10 35

मुद्रक
बालाजी ऑफसैट
एम-28, नवीन शाहदरा
दिल्ली - 110 052

मूल्य : एक सौ अस्सी रुपये

ATH KĀTNĀ KUTTE KĀ BHAIYĀJI KO
(An anthology of satires)
by Dr. Ganga Prasad Gupta 'Barsaiya'

PRICE Rs. 180.00

दो शब्द ये भी

'अरमान वर पाने का' और 'निन्दक नियरे राखिये' के बाद व्यंग-लेखों का यह तीसरा संग्रह आप सभी को सौंपते हुए निश्चित रूप से प्रसन्नता और आश्वस्ति का अनुभव हो रहा है। उम्मीद नहीं थी कि तीसरा व्यंग-संग्रह इतनी जल्दी आ जाएगा, पर जब आने का सुयोग बना तो प्रसन्नता स्वाभाविक ही है। इसका बहुत कुछ श्रेय सार्थक प्रकाशन को भी है।

पूर्व के दो संग्रहों में संग्रहित व्यंग-लेखों को प्रकाशित करते समय संकोच हो रहा था कि जाने पाठकों की कैसी प्रतिक्रिया हो। पाठकों की प्रतिक्रिया पर ही रचनाकार का भविष्य निर्भर होता है। जिस लेखन में जीवन का रस होगा उसी को पाठक स्वीकार करेगा। स्वीकृति से लेखन सक्रिय और शक्तिशाली बनता है और अस्वीकृति से निष्क्रिय। प्रतिक्रिया भी दोहरा कार्य करती है—पाठकों को चेतना देती है और रचनाकार को प्रेरणा। मेरे पूर्व व्यंग लेखों पर बहुत सकारात्मक प्रतिक्रियाएं मिली, उनको यहां उद्धृत करना आवश्यक नहीं है, विशेषकर अपरिचित विद्वान और पाठक जब अपनी संतुष्टि व्यक्त करते हैं तब अलग प्रकार की सुखानुभूति होती है। लगता है कि रचना सार्थक हो गई। उन्हीं सकारात्मक प्रतिक्रियाओं के परिणामस्वरूप यह तीसरा व्यंग संग्रह प्रकाशित कराने की प्रेरणा मिली, साहस जुटा, क्योंकि लेखन से अधिक जिम्मेदारी का कार्य प्रकाशन का होता है। प्रकाशित रचना एक व्यक्ति की नहीं अपितु सम्पूर्ण समाज की बन जाती है। कोई भी रचनाकार सामाजिक दायित्व की अनदेखी नहीं कर सकता। उसे समाज की कसौटी पर खरा उतरना ही होगा। यदि रचनाकार ऐसा नहीं करता तो वह सृजन और समाज दोनों के प्रति बेईमानी और गैर जिम्मेदारी होगी। मैं अपने लेखन के बारे में आश्वस्त हूं कि वहां न तो रंच बेईमानी है और न ही गैर जिम्मेदारी की भावना। जो समाज में है वही मेरे लेखन में है। अत: समाज की वस्तु समाज को सौंपते हुए मुझे कबीरदास की पंक्तियां स्मरण आ रही हैं—

मेरा मुझमें कुछ नहीं जो कुछ है सो तेरा।
तेरा तुझको सौंपता क्या लागे है मेरा।

आज प्रकाशन के साधनों की बहुतायत है। अनेक ग्रंथ रोज छप रहे हैं फिर भी ग्रामीण क्षेत्र की श्रेष्ठ प्रतिभाएं प्रकाशन से वंचित हैं। उनकी स्थिति वही है जो गांव और राजधानी के कार्यक्रमों की होती है। राजधानी का छोटा सा कार्यक्रम भी प्रचार-प्रसार और सम्पर्क के सहारे बड़ा और अखिल भारतीय हो जाता है जबकि गांव का बड़ा, श्रेष्ठ और वस्तुत: अखिल भारतीय कार्यक्रम अखबारों में दो पंक्तियों का समाचार भी नहीं बन

पाता। ठीक यही स्थिति दूरस्थ ग्रामीण लेखकों-कलाकारों की भी है। राजधानी की शहरी जमीन की कृतियां और कृतिकार-कलाकार अनायास ही जितनी-जल्दी प्रतिष्ठा और चर्चा की ऊंचाई पा जाते हैं, तमाम प्रयासों के बावजूद उसका सहस्राश भी ग्रामीण प्रतिभाओं-प्रकाशनों को नहीं मिल पाता क्योंकि गांवों का देश भारत आज शहरों में ही सिमट कर रह गया है। इसीलिए सृजन भी प्रदूषण का शिकार हो रहा है। उसकी व्यापकता दिनोंदिन खंडित हो रही है। व्यापार-भाव प्रबल हो रहा है। प्रभाव-शक्ति क्षीण हो रही है।

मेरे इस संग्रह के दो भाग हैं—खंड एक में चौबीस व्यंग लेख हैं और खंड दो में छः नाटिकाएं (झलकियां)। अधिकांश विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित अथवा आकाशवाणी से प्रसारित हैं। छः में से तीन नाटिकाएं बुन्देली में हैं जिनमें स्थानीय भाषा व जीवन की झलक देखी जा सकती है। कई झलकियां तो बीसियों बार श्रोताओं के आग्रह पर प्रसारित की गई हैं। उन सबके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना अपना कर्तव्य मानता हूं। कुछ नई झलकियां और आलेख हैं वे भी पसंद किये जाएंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

व्यंग का जन्म विसंगतियों से होता है। जीवन विसंगतियों से न कभी मुक्त रहा है और न रहेगा। जीवन और व्यंग का शाश्वत संबंध है। पिछले संग्रहों में मैंने व्यंग के बारे अपना विस्तृत दृष्टिकोंण व्यक्त किया है। यहां उसे दुहराना निरर्थक है। आज का युग तो विसंगतियों और विकृतियों का ही युग है। इसीलिए व्यंग विधा पूरी शक्ति से फल फूल रही है। अब व्यंग न तो साहित्य में अछूत है और न हेय, बल्कि सर्वाधिक लोकप्रिय विधा कहा जाएं तो अतिशयोक्ति न होगी। सब कुछ कह पाने और सत्य का दर्शन कराकर सचेत करने का सबसे सशक्त माध्यम आज व्यंग ही है। इन लेखों में भी वर्तमान का देखा-सुना सत्य अंकित है। विसंगति भला किसे पीड़ित नहीं करती और वही पीड़ा प्रतिक्रिया बनकर व्यक्त होती है। यही सब इस संग्रह में भी है।

विश्वास है कि आप सब तटस्थ भाव से पढ़कर मुझे अपनी प्रतिक्रियाओं से अवगत कराएंगे ताकि मैं उनसे आगे के लिए दिशा और शक्ति प्राप्त कर सकूं। मेरी पुत्र-वधू सौ. रचना ने इन आलेखों की स्वच्छ प्रतियां तैयार की हैं, अतः उसे शतशः शुभाशीष।

– डा. बरसैया

अनुक्रम

उनकी महानता	11
मैं भैरव प्रसाद हूं	15
पंडित चरणदास चारण	19
अथ काटना कुत्ते का भइया जी को	23
चैन खिंचने का सुख	29
परमीशन	34
मोदिनी मर्दिनी मदिरे	39
दाढ़ का सत्य	43
बहुरे दिन होली के	47
स्वर्ण-जयंती का दारोमदार	51
आयोजन पशु-प्रवीणों का	57
जयंती बनाम राग जै जैवंती	62
परपंच के सरपंच	65
कीटाणु	69
साहित्य की आंतों में फंसा कोलायटिस	74
मांग कर पढ़ना	78
प्रभु! मृतात्मा को कार दो, कोठी दो...	83
साहित्य समर्थक दस्युराज	87
जब हमने कुकिंग गैस ली	91
बड़ा हुआ तो क्या हुआ...	97
दूधो नहाओ	102
प्रतिष्ठा-प्रतिष्ठान	105
इतवारी लाल का परमहंसी सोच	111
पेट और पीठ जिंदाबाद	115

झलकियां

उद्‌घाटन	121
परिवर्तन	127
पड़ोसन	134
किराएदार	150
बुढ़ापा	156
राइट टाइम	162

डॉ. गंगा प्रसाद गुप्त 'बरसैंया'

जन्म : 6 फरवरी, 1937

शिक्षा : एम. ए. पी-एच डी.

कृतियां : हिन्दी साहित्य में निबंध और निबंधकार (शोध प्रबंध), छत्तीसगढ़ का साहित्य और उसके साहित्यकार, आधुनिक काव्य-संदर्भ और प्रकृति, हिन्दी के प्रमुख एकांकी और एकांकीकार, बुन्देली : एक भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, मानस मनीषा आदि उच्चकोटि की 20 पुस्तकें।
लगभग 220 शोध-परक निबंधों का देश की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन।
12 शोध छात्रों में पी-एच. डी. उपाधि प्राप्त।
अब तक 20 लघुशोध प्रबंध प्रस्तुत।
नव-ज्योति 'संज्ञा' व 'बन्धु' पत्रिकाओं का संपादन।
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, जीवाजी विश्वविद्यालय के पंजीकृति शोध-निर्देशक (परीक्षक आदि)।

सम्मान : साहित्य सम्मेलनों, नगरपालिकाओं, हिन्दी प्रचारिणी सभा आदि द्वारा साहित्य श्री, तुलसी पुरस्कार, विद्रोही पुरस्कार, साहित्य भारती आदि पुरस्कारों से अलंकृत।

सार्थक प्रकाशन
100 ए, गौतम नगर, नई दिल्ली-110 049